की जाती है।

Dept. of economics
Raja Singh College Siwan

7.1.20

BA Part 1
Paper III

आर्थिक प्रावैगिकी (economic dynamic)

आर्थिक प्रावैगिकी को परिवर्तन का त्वरण (acceleration) या परिमन्दन (deceleration) कह सकते हैं। जैसा कि अर्थशास्त्री हेक्स ने कहा है। "प्रावैगिकी का संबंध आवश्यकतौर से परिवर्तन और असंतुलन की स्थितियों से है।" यह परिवर्तन की प्रक्रिया का विश्लेषण है जो काल पर्यन्त चलता रहता है। समय के साथ अर्थव्यवस्था में दो तरह से परिवर्तन हो सकता है एक तो उसके ढाँचे में परिवर्तन किए बगैर और दूसरा उसके ढाँचे को बदल कर। आर्थिक प्रावैगिकी दूसरे प्रकार के परिवर्तन से संबंध रखती है। यदि जनसंख्या, पुंजी, उत्पादन की तकनीकों, व्यापार संगठन के रूपों और लोगों की रुचियों में से किसी एक या सब में परिवर्तन हो जाए, तो अर्थव्यवस्था भिन्न ढाँचा धारण कर लेगी और आर्थिक प्रणाली अपनी दिशा बदल लेगी। इसे हम एक चित्र द्वारा समझेंगे।

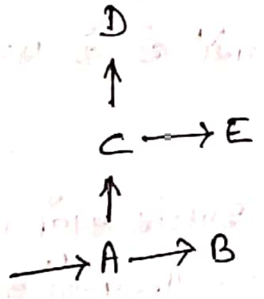

उपरोक्त चित्र में अर्थव्यवस्था में प्रारंभिक मूल्य दिए हुए होने पर वह AB मार्ग पर चलती है, परन्तु A पर स्वचालित आपातक ढाँचे को बदल देती है और संतुलन की दिशा C की ओर बदल जाती है। फिर यह D की ओर जाती है। परन्तु C पर ढाँचा और दिशा E की ओर बदल जाते हैं। इस प्रकार आर्थिक प्रावैगिकी एक संतुलन स्थिति से दूसरी की ओर के मार्ग का अध्ययन करती है जैसे A से C की ओर के मार्ग का और C से E की ओर मार्ग का।

इसे विस्तृत में प्रमुख अर्थशास्त्रीयों ने अपने बनाये

P.T.O.

Scanned by CamScanner

तरीके से समझाया है जो इस प्रकार है।

प्रो० हिक्स के अनुसार → अर्थ व्यवस्था का वह भाग जिसमें हर मात्रा तिथ्यांकित हो आर्थिक प्रावैगिकी कहलाता है।

प्रो० हैरड → "एक वृद्धिशील अर्थ व्यवस्था की विशेष प्रकृति द्वारा अर्थ व्यवस्था में विभिन्न तत्वों के वृद्धि दरों के आवश्यक संबंधों से है।" वह समझता है कि एक बार परिवर्तित आर्थिक स्थैतिकी के क्षेत्र में आते हैं।

प्रो० रैगनर फ्रिश के अनुसार → यह ऐसी अवस्था है जिसमें 'भिन्न भिन्न समयों पर चर एक आवश्यक ढंग से सम्मिलित रहते हैं। यह अनिवार्यता एक प्रावैगिकी सिद्धान्त की विशेषता है- यह व्याख्या करना कि एक स्थिति पिछली स्थिति से बाहर कैसे निकलती है", इस प्रकार आर्थिक प्रावैगिकी में भिन्न-भिन्न समय बिन्दुओं पर आर्थिक चरों के फलनात्मक संबंधों की खोज शामिल रहती है।

प्रो० कुजनेट्स → आर्थिक प्रावैगिकी उस आर्थिक सिद्धान्त को कहते हैं, जो आर्थिक परिवर्तनों की स्थिति और उन परिवर्तनों के अर्थों की व्याख्या और दिए हुए परिवर्तन को लाने में कार्यशील साधनों की माँप तथा उस परिवर्तन एवं परवर्ती गतियों के क्रमिक परिणामों का सामना करने का प्रयत्न करता है।

Scanned by CamScanner